क्या संदिग्ध आंतकवादी जीव विज्ञान न पढ़े?

ब्रिटेन के एक जज को लगता है कि हाई स्कूल का रसायन शास्त्र पढ़कर व्यक्ति आतंक के हथियार बना लेगा। वैज्ञानिकों को लगता है यह डर निराधार है।

एक ब्रिटिश जज ने फैसला दिया है कि एक संदिग्ध आंतकवादी रसायन और मानव जीव विज्ञान विषयों के हाई स्कूल स्तर के कोर्स नहीं पढ़ सकेगा। हाई कोर्ट के जज स्टीफन सिल्बर का मत है कि ये पाठ्यक्रम संदिग्ध आतंकवादी को ऐसी क्षमता प्रदान करेंगे कि वह जैविक व रासायनिक हमले कर सकेगा। नाम गुप्त रखने के लिए उक्त व्यक्ति को ए. ई. नाम दिया गया है।

अलबत्ता वैज्ञानिकों को यकीन है कि मानव जीव विज्ञान में हाई स्कूल स्तर का कोर्स शायद ही किसी आतंकवादी को हुनर के रूप में कुछ दे पाएगा। उन्हें नहीं लगता कि यह कोई वास्तविक खतरा है। वैज्ञानिकों को लगता है कि जज का निर्णय इस गलतफहमी पर आधारित है कि हाई स्कूल का रसायन शास्त्र पढ़कर कोई व्यक्ति रासायनिक हथियार बना लेगा। वैसे आजकल इस कोर्स की सारी सामग्री इंटरनेट पर आसानी से उपलब्ध होती है।

ए. ई. एक इराकी नागरिक है और उस पर अल कायदा से सम्बंध रखने का संदेह है। 2006 से उसे 'नियंत्रण आदेश' के तहत रखा गया है अर्थात उसकी स्वतंत्रता पर कुछ रोक लगाई गई हैं। कोई भी कोर्स करने से पहले उसे गृह विभाग से अनुमति लेनी होती है।

सितम्बर 2007 में उसने हाई स्कूल स्तर के रसायन शास्त्र और मानव जीव विज्ञान के कोर्सों में दाखिला लेने की अनुमति चाही। इराक में ए. ई. डॉक्टर के तौर पर ट्रेनिंग ले रहा था और ये कोर्स उसकी डॉक्टरी पढ़ाई के लिए ज़रूरी हैं। गृह विभाग ने उसकी प्रार्थना यह कहकर अस्वीकार कर दी थी कि इस कोर्स की पढ़ाई को आंतकी गतिविधियों के लिए उपयोग किया जा सकता है। ए. ई. ने अदालत के दरवाज़े पर दस्तक दी है। उसका दावा है कि ये कोर्स पूरी तरह हानिरहित हैं।

21 जुलाई को अदालत ने अपने आदेश में गृह विभाग के दावे को सही ठहराया। अदालत ने यह फैसला एक अज्ञात सुरक्षा अधिकारी (जिसका नाम X बताया गया है) की गवाही के आधार पर दिया है। न्यायमूर्ति सिल्बर ने कहा है कि इस कोर्स से ए. ई. को ऐसे हुनर प्राप्त होंगे और ऐसे उपकरणों का उपयोग करने की क्षमता हासिल होगी जिनका उपयोग आतंकी गतिविधियों में किया जा सकेगा। लेकिन वैज्ञानिकों को लगता है कि विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों को भी एंथ्रेक्स रोगाणु की अधिक मात्रा बनाने में परेशानी आती है। उनका जीव विज्ञान कोर्स उन्हें यह सब नहीं सिखाता।

सिल्बर ने इराक में हुई ए. ई. की मेडिकल ट्रेनिंग पर भी सवाल उठाया है। उसके वकील का कहना है कि इस कोर्स से ए. ई. को मात्र वह याद करने में मदद मिलेगी जो वह पहले ही सीख चुका है। मगर जज पर इस दलील का कोई असर नहीं हुआ। अब ए. ई. इस फैसले के खिलाफ अपील करने पर विचार कर रहा है। ***(स्रोत फीचर्स)***